International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 2.635| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 4, Issue 3, May 2017 ||

भारत और ईजराइल संबंध : स्वतंत्रता से अब तक

Dr. Sucheta Gupta

Lecturer, Department of Political Science, Government College, Bibirani, (Alwar) Rajasthan, India

भारत दक्षिण एशिया में ओर ईजरायल मध्यपूर्व (पश्चिम एशिया) का में स्थित देश है। यह दोनों ही लोकतांत्रिक देश है पर भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जबकि ईजरायल एक यहूदी राज्य है। भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ था जबकि ईजरायल की स्थापना 1948 में की गई थी। भारत ओर ईजरायल के संबंध शुरुआती दौर में संबंध खराब थे क्योंकि भारत का फिलिस्तीन ओर अरब राष्ट्रवाद का समर्थन किया। जिस कारण इनके संबंधों में कड़वाहट रही। इन दोनों देशों ने कुटनीतिज्ञ संबंध स्थापित नहीं किये। इनके आपस में कुटनीतिज्ञ संबंध स्थापित न करने के कई कारण थे। पहला कि भारत के अनुसार ईजरायल द्वारा अंतरराष्ट्रीय कानूनों की अवहेलना की गई साथ में न ही कोई समझौता वार्ता की।

ईजरायल द्वारा दूसरे राज्यों के क्षेत्रों पर कब्जा किया गया जो अंतरराष्ट्रीय मापदंडों कि निगाहें में यह एक अपराध है। दुसरा कि भारत एक गुट निरपेक्ष देश था जबकि ईजरायल अमेरिकी गुट का मैंबर था। जिस कारण ईजरायल से संबंध स्थापित करने से उसकी गुट निरपेक्ष छवि पर दुसरे राज्यों को संदेह होता।

तीसरा कारण था कि भारत को कश्मीर मुद्दे पर अंतरराष्ट्रीय समर्थन किया जरूरत थी। भारत ईजरायल के साथ संबंध स्थापित करता तो वह देश भारत के विरुद्ध पाकिस्तान का साथ देते। इनके कारणों से भारत ओर ईजरायल के राजनीतिक कुटनीतिज्ञ संबंध स्थापित न हो सके। पर भारत ने अपनी आगे जाकर अपनी पुरानी नीति में बदलाव किया ओर ईजरायल के साथ संबंध स्थापित करने के लिए तैयार हो गया। भारत और ईजरायल संबंधों को तीन काल में बांटा गया है। जिनके आधार पर भारत और ईजरायल संबंध इस प्रकार है:

I. पहला कालः 1950 से 1991 तक

भारत द्वारा अपने रवैए में परिवर्तन करते हुए 1950 में ईजरायल को राष्ट्र के रूप में मान्यता प्रदान की। इस के दौरान ईजरायल द्वारा भारत में 1951 में अपना वाणिज्य दूतावास मुंबई में खोला। पर फिर भी भारत द्वारा ईजरायल के साथ राजनीतिक कुटनीतिज्ञ संबंध स्थापित नहीं किए गए। भारत का रवैया ईजरायल के विरुद्ध ही रहा। फिर भी ईजरायल द्वारा 1962 में चीन और 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के समय भारत का समर्थन किया। यहां तक की ईजरायल द्वारा कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग माना। जबकि अरब राष्ट्रों द्वारा भारत का कश्मीर मुद्दे पर कभी समर्थन नहीं किया गया। जब भारत द्वारा 1971 में सोवियत संघ के साथ 20 वर्ष की मैत्री और शांति संधि कि तो ईजरायल ने भारत से दूरी बना ली। क्योंकि ईजरायल अमेरिकी गुट का मैंबर था। ईजरायल कि भारत से दूरी का एक कारण ओर भी था कि भारत के सीरिया, लीबिया ओर इराक से मित्रतापूर्ण संबंध थे जो ईजरायल के शत्रु थे। इस काल में इन के बीच दुरी बनी रही।

II. दुसरा कालः शीत युद्ध से एनडीए सरकार के काल तक (1991-2004)

शीत युद्ध के खत्म होने के साथ सोवियत संघ का भी विघटन हो गया। भारत ने सच्चा मित्र को दिया। अब भारत को अपनी विदेश नीति में परिवर्तन करने की जरूरत थी। क्योंकि अब अमरीका ही एकमात्र महाशक्ति रह गई थी। यहां तक की सब देशों ने अपनी विदेश नीति में परिवर्तन किया। चीन और रूस के द्वारा अपने रवैए में बदलाव करते हुए ईजरायल के साथ संबंध सुधारें।

1991 में चीन द्वारा ईजरायल के साथ कुटनीतिज्ञ संबंध स्थापित किए। भारत को भी अब अपने विदेश नीति में बदलाव किया जरूरत थी। भारत द्वारा अपने दृष्टिकोण में परविर्तन करते हुए 16 दिसंबर, 1991 में संयुक्त राष्ट्र के एक प्रस्ताव जिसमें जियोनिज्म को रेसिज्म माना गया था 1975 के प्रस्ताव को खत्म करने के लिए ईजरायल के पक्ष में मतदान किया। जो कि भारत और इजराइल के संबंधों में बदलाव का संकेत था।

भारत द्वारा 29 जनवरी, 1992 को ईजरायल के साथ राजनीतिक संबंध स्थापित करने की घोषणा की। भारत ओर ईजरायल द्वारा एक दूसरे कि राजधानी में दुतावास खोलो गये। इस दौरान दोनों देशों के बीच वार्ताएं होई। ईजरायल के विदेश मंत्री शीमेन पेरेस द्वारा भारत कि यात्रा की गई। इस यात्रा दौरान दोनों देशों के बीच तीन समझोते विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संस्कृति तथा पर्यटन पर हस्ताक्षर हुए। इसके बाद इनके संबंध लगातार समय के साथ गहरे होते गये। दोनों देशों के बीच व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 1993 में 'संयुक्त वाणिज्य परिषद' की स्थापना की गई। वहीं 1993 में 'विज्ञान तकनीकी कोष' की स्थापना की गई। इस काल में भारत ईजरायल संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। वर्ष 1997 से 2000 के बीच भारत ईजरायल 500 मिलियन डॉलर की खरीद की गई। जब

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 2.635| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 4, Issue 3, May 2017 ||

भारत द्वारा 1998 में भारत द्वारा जब परमाणु विस्फोट किया तो ईजरायल ने इसकी निन्दा नहीं की। 1999 के कारगिल संकट के दौरान ईजरायल द्वारा भारत को महत्वपूर्ण सैनिक सामग्री प्रदान कराई गई।
देखा जाए तो एनडीए सरकार में भारत ईजरायल संबंध प्रगति पर और मधुर थे। 2-4 दिसंबर, 1999 में ईजरायल सरकार के निमंत्रण पर भारत के प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव द्वारा इंजरायल की यात्रा की गई। फिर भारतीय गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा 14-18 जून, 2000 को ईजरायल की यात्रा की गई। इस यात्रा दौरान दोनों देशों के बीच आतंकवाद का मुकाबला करने हेतु एक कार्यसमूह गठित करने का फैसला लिया गया। इसके बाद 30 जून से 3 जुलाई तक भारतीय विदेश मंत्री जसवंत सिंह द्वारा ईजरायल की यात्रा की। वह पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने ईजरायल की यात्रा की। इस यात्रा दौरान दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त आयोग को स्थापित करने का निर्णय लिया गया। वर्ष 2001 में भारतीय कंपनी हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा इंजरायल के रक्षा मंत्रालय की सहयोगी कंपनी 'ईजरायल एयरक्राफ्ट इंडस्ट्रीज' के साथ 2 अरब डॉलर का एक शस्त्र समझौता पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के रूपरेखा के अनुसार इजरायली कंपनी द्वारा भारतीय कंपनी को लड़ाकू विमान, सतह से सतह तक मार करने वाली मिसाइलें और राडार प्रणाली की आपूर्ति की जाएगी।

इसके बाद ईजरायल प्रधानमंत्री वर्ष 2003 में पहली बार भारत की यात्रा की। वहीं 5 मार्च, 2004 को भारत द्वारा ईजरायल के साथ फाल्कन एयरबोर्ड वार्निंग कंट्रोल सिस्टम खरीदने के समझौता पर हस्ताक्षर हुए। यह भारत द्वारा अपने लक्ष्य प्रणाली को मजबूत करने के लिए किया गया। इस तरह देखा जाए तो एनडीए सरकार में भारत ईजरायल के संबंध बहुत अच्छे थे। विशेष तौर पर वर्ष 2001 बाद यह संबंध प्रगति पर थे। क्योंकि आतंकवाद के खिलाफ ईजरायल ने भारत को खुब सहयोग किया। भारत, अमरीका एवं ईजरायल को त्रिकोण रुपी सामरिक संबंध बने।

III. तीसरा कालः यूपीए सरकार के कार्यकाल तक (2004-2014)

यूपीए सरकार के समय दौरान भारत ईजरायल संबंधों में उतार चढ़ाव होते रहे। क्योंकि यूपीए सरकार द्वारा ईजरायल से खुले संबंध बनाने से परहेज़ रखा गया। इसके कई कारण थे। पहला की कांग्रेस को सरकार में वामपंथी दलों का समर्थन प्राप्त था जो ईजरायल को साम्राज्यवादी राज्य मानते थे। उनके समर्थन वापस लेने के डर से ईजरायल से खुले संबंधों से परहेज़ किया गया। वर्ष 2006 में ईजरायल द्वारा लेबनान पर हमले किए। भारतीय संसद द्वारा इसकी निन्दा की गई। वर्ष 2007 में ईजरायल और भारत द्वारा अपने राजनीतिक संबंधों कि 15 वीं वर्षगांठ बनाई गई। इस वर्ष दौरान इनके बीच 2,440.3 मिलियन का द्विपक्षीय व्यापार हुआ। इस तरह इनके संबंधों में उतार चढ़ाव होते हुए भी संबंध प्रगति करते रहे।

वर्ष 2012 में भारतीय विदेश मंत्री द्वारा ईजरायल की यात्रा की गई। इस यात्रा दौरान उन्होंने ईजरायल को भारत का प्राकृतिक मित्र कहा।। इस यात्रा दौरान इनके बीच मुक्त व्यापार समझौते की भी बात की गई। क्योंकि इनके बीच व्यापार 5 बिलियन डॉलर के लगभग होने लग गया था। इनके संबंधों में कड़वाहट उस समय आई जब वर्ष 2012 में भारत, चीन ओर रुस द्वारा संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन को गैर पर्यवेक्षक राज्य का दर्जा देने के प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। पर ईजरायल ने इस प्रस्ताव के विरोध में मतदान किया था। यह इनके संबंधों का बुरा दौर था। इस काल में इनके संबंधों में तनाव ही रहा।

IV. तीसरा कालः एनडीए 1 से वर्तमान तक

वर्ष 2014 में एनडीए सरकार सत्ता में आई। इस बार वर्ष 1989 के बाद किसी पार्टी को पूर्ण बहुमत हासिल हुआ। भारतीय विदेश नीति में एनडीए सरकार में निर्णायक परिवर्तन किया गया। अब भारतीय विदेश नीति के निर्णयकर्ता स्वयं भारतीय प्रधानमंत्री थे। उन्होने ने ईजरायल के साथ संबंध सुधारने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने समान दुरी के सिद्धांत पर हरेक राज्य के साथ संबंध स्थापित करने की नीति अपनाई। भारत द्वारा ईजरायल के प्रति नीति संबंध मजबूत करने के कई कारण थे। पहला कारण है की चीन द्वारा भारत को संतुलित करने की नीति अपनाई हुई थी। भारत को अपनी स्थिति मजबूत करने में ईजरायल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। दूसरा कारण है की ईजरायल हथियार निर्यातक देश है वह अपने हथियार चीन ओर पाकिस्तान के बेचना चाहता है जो भारत के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। तीसरा कारण है कि पाकिस्तान के फिलहाल ईजरायल के साथ राजनीतिक संबंध नहीं है। पाकिस्तान द्वारा अभी तक ईजरायल को मान्यता नहीं दी गई है।

भविष्य में यह नजदीक आते हैं तो भारत को इसका नुकसान हो सकता है। इस तरह भारत द्वारा अपने रवैए में परिवर्तन किया गया। भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र में जुन 2015 में मानवाधिकार परिषद द्वारा ईजरायल विरुद्ध एक प्रस्ताव लाए गया जिसमें भारत अनुपस्थित रहा। यह सब भारत ईजरायल संबंधों के मित्रतापूर्ण होने के परिणाम है।

V. निष्कर्ष

भारत और ईजरायल संबंधों को देखा जाए तो एनडीए सरकार में यह संबंध काफी मजबूत हुए हैं। जबकि कांग्रेस सरकार में इन संबंधों में उतार चढ़ाव रहें। वर्तमान में भारत ईजरायल संबंध कफी मजबूत हुए हैं। कई विद्वानों का मत है कि ईजरायल के साथ

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 2.635| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 4, Issue 3, May 2017 ||

मित्रतापूर्ण संबंधों बनने से फिलिस्तीन से भारत के संबंध खराब हो सकतें हैं। पर यह धारणा गलत है। भारत द्वारा दोनों देशों के प्रति समान दूरी की नीति अपनाई गई है। जिसका उदाहरण हाल में ही येरूशलम को ईजरायल राजधानी घोषित करने वाला प्रस्ताव अमरीका द्वारा संयुक्त राष्ट्र में लाया गया। जिसके विरोध में भारत सहित 128 देशो ने मतदान किया वहीं नौ देशों ने समर्थन किया और 35 अनुपस्थिति रहे। यह भारत की समान दुरी की नीति के प्रमाण है। वहीं बहुत से विद्वानों द्वारा भारत द्वारा इंजरायल और फिलिस्तीन के प्रति अपनाई नीति को डी हाईफनेशन' का नाम दिया है।

सन्दर्भ

1. अंतरराष्ट्रीय राजनीति (डॉ. बी.एल. फड़िया एवं डॉ. कुलदीप फडिया) पृष्ठ संख्या 319-322
2. भारत की विदेश नीति (राजेश मिश्रा) पृष्ठ संख्या 174-180
3. 21 वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय संबंध (पुष्पेश पंत) पृष्ठ संख्या 54-56
4. अंतरराष्ट्रीय संबंध (तपन बिस्वाल) पृष्ठ संख्या 169-172
5 India & Israel Relations Jawaharlal Nehru To Narendra Modi उतार & Amar Ujala
6.https://navbharattimes.indiatimes.com
7. India Israel ties इजरायल भारत के संबंधः अविश्वास, गुप्त... NBT
8 https://www.drishtuas com hindi-और मजबूत होते हुए भारत-इजराइल संबंध- Drishti IAS
9. khabar.ndtv.com
10.आखिर क्यों है इस्राइल भारत के लिए महत्वपूर्ण, आइए समझें.